डॉ. सविता व्ही. रूक्के

हिन्दी विभाग प्रमुख

मातोश्री शांताबाई गोटे कला, वाणिज्य एवं विज्ञान महाविद्यालय वाशिम

- रीतिकाल का सामान्य परिचय–
- हिन्दी साहित्य का उत्तर मध्यकाल सन् 1643 ई. से सन् 1843 ई. तक जिसमें सामान्य रूप से श्रृंगारपरक लक्षण ग्रंथों की रचना हुई, नामकरण की दृष्टि से विद्वानों में पर्याप्त मतभेद का विषय रहा है। मिश्रबंधुओं ने इसे 'अलंकृत काल' कहा है, तबकि आचार्य रामचंद्र शुक्ल इसे 'रीतिकाल' और पं. विश्वनाथप्रसाद मिश्र ने 'श्रृंगारकरल' कहा है।

- रीति शब्द की व्याख्या–संस्कृत–काव्यशास्त्र के अंतर्गत 'रीति' शब्द उस काव्यांग विशेष के लिए ही रूढ़ है, जिसे काव्य की आत्मा के रूप में घोषित कर आचार्य वामन ने तत्संबंधी पृथक संप्रदाय का प्रवर्तन किया। उनके अनुसार गुण विशिष्ट रचना–अर्थात पदसंघटना–पध्दति–विशेष का नाम 'रीति' है। अर्थात रीति का अर्थ मार्ग, पध्दति है।

- रीतिकाल की प्रमुख धाराएँ–
- रीतिकाल की प्रमुख तीन धाराएँ है।
- 1. रीतिबध्द–जिन्होंने रीतिग्रंथों की रचना न करके काव्य सिध्दातों या लक्षणों के अनुसार काव्य रचना की है। अलंकार, रस ,नायिका भेद, ध्वनि आदि उनके ध्यान में तो रहे है परंतु उनका प्रत्यक्षः निरूपण इन कवियों ने नहीं किया। उत्कृष्ट काव्य का सृजन किया है। ऐसी दशा में कवि है आचार्य नहीं। कवि है केशव, चिंतामणि, मतिराम, सेनापति और देव आदि

2. रीतिसिध्द–रीतिसिध्द कवि वे है जिन्होंने लक्षण उदाहरण की पध्दति तो नहीं स्वीकर की किंतु काव्य रचना में समय लक्षणों का ध्यान अवश्य रखते है। कवि है बिहारी, रसनिधि

3.रीतिमुक्त– रीतिमुक्त वे कवि है जो लक्षण–उदाहरण की न तो पध्दति अपनाते है न लक्षणों का ध्यान रखते है। यह कवि प्रेम के विशेषतः विरह के उन्मत गायक कवि है। घनानंद, आलम, बोधा, ठाकूर आदि

- रीतिकाल की प्रवृत्तियॉ
- उत्तर मध्यकाल को रीतिकाल के नाम से जाना जाता है। इस समय के शासक साहित्य प्रेम, काव्यप्रेम तथा मनोरंजन के लिए कवियों को आश्रय देने लगे थे। कवियों का मुख्य ध्येय आश्रयदातों का मनोरंजन करना था। क्योंकि कवि अपनी कला को राजदरबारों में गिरवी रख चूका था। इस काल के कवियों में स्वतंत्र सुख और परहित का अभाव है। राम और कृष्ण की प्रेम लीलाओं की ओट में कविगण, श्रंगार वर्णन, ऋतु वर्णन, नखशिख वर्णन आदि पर कविता लिखकर आचार्यत्व और पांडित्व की होड़ में लगे हुए थे।

- कवियों ने कलापक्ष में ही कुछ अधिक चमत्कार और नवीनता लाने का प्रयास किया। रीति का अर्थ शैली है। इन कवियों ने काव्य शैली इस विशिष्ट पध्दति का विकास किया इसीलिए इस काल को रीतिकान कहा जाता है, इस काल में अलंकार,रस भेद, नायिका नखशिख वर्णन छंद आदि काव्यागों पर प्रचुर रचना हुई है।

- रीतिकाल की प्रवृत्तियॉ–
- 1.लौकिक श्रृंगारिकता–इस काल के कवियों का मुख्य काव्य रस श्रृंगार रस है। नायिकाओं का नखशिख वर्णन और ही कटाक्ष वर्णन इनका लक्ष्य रहा है। इसी कारण इस काव्य का वर्णन विषय अधिक विस्तार नहीं पा सका। नारी को केवल भोग्या के रूप में देखा गया।
- 2.नायिका भेद–इन कवियों की लेखनी से नायिका भेद सुंदर वर्णन प्रकाश में आया है। भेद वर्णन अत्याधिक उत्तेजक और कामुक भी है।

- 3. लक्षण ग्रंथें का निर्माण– इसकाल के कवियों को लक्षण ग्रंथ लिखकर आचार्य का भी कार्य करना पड़ा किंतु दोनों कार्यो में एक भी कार्य अच्छी तरह नहीं हुआ। इस काल के कुछ कवियों ने लक्षण लिखकर स्वरचित उदाहरण प्रस्तुत किये इनमें भूषण, देव आदि है। बिहारी प्रमुख है। जिन्होंने केवल उदाहरण प्रस्तुत किये।

- 4. अलंकारिकता–कवियों को अलंकार प्रिय थे, वे मानते थे ‘भूषण बिना न सोई, कविता वनिता मित’ इस दृष्टि से इन कवियों ने अपनी कविता कामिनी को अलंकार से खूब सजाया है।
- 5.ब्रज भाषा–इस काल की साहित्यिक भाषा ब्रज रही। ब्रज भाषा में कोमलता और मधुरता की दृष्टि से सर्वोपरी है। असी कारण मुसलमान कवियों ने भी इसी भाषा को स्वीकार किया है।

- 6.मुक्तक कवि– रीतिकाल में प्रबंध काव्य लिखने का प्रचलन नहीं रहा। सभी कवियों ने मुक्तक काव्य शैली को अपनाया है। श्रृंगार वर्णन के लिए यह शैली उपयुक्त है। इन कवियों ने दोहा, सोरठा, कविता में अपनी भावनाओं का प्रकाशन किया है। साथ ही रीतिकालीन साहित्य में भावपक्ष की तुलना में कला पक्ष को प्रधानता है। इन कवियों ने चित्रयोजना, अलंकार योजना, नाद योजना तथा छंद योजना को महत्व दिया है।

- 7.वीर रस प्रवाह– आदिकाल की वीर धारा जो भक्तिकाल में समाप्त हो गयी थी, रीतिकाल में पुनः उसका उत्थान हुआ। भूषण जैसे कवियों में वीर धारा को राष्ट्रीयता की ओर मोड़ दिया है। एतिहासिक पुरूषों को चारित्रिक बनाया है। जिन पर हिन्दू जाति और धर्म की रक्षा का भार था।

धन्यवाद